शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसंबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संपादकीय

हिंदी माध्यम में शोध और शोधार्थी

पुष्पेन्द्र दुबे

हिंदी भाषा के विस्तार के साथ-साथ हिंदी भाषा में शोध कार्य भी बहुतायत में हो रहा है। कभी शोध कार्यों के लिए अंगरेजी का वर्चस्व रहा करता था, परन्तु उच्च शिक्षा में हिंदी को स्वीकारने के बाद अब यह टूटता नजर आ रहा है। परम्परागत और आधुनिक व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में हिंदी भाषा को व्यापक रूप से अपनाया जा रहा है। अनुवाद प्रौद्योगिकी ने भी इसमें अपना योगदान दिया है। कभी हिंदी भाषा में शोध कार्य प्रस्तुत करने के लिए आन्दोलन का सहारा लेना पड़ा था, अब वैसी स्थिति नहीं है, लेकिन विभिन्न विषयों में हिंदी माध्यम में शोध करने वाले शोधार्थियों की हिंदी भाषा के स्तर को संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। उनके शोध में शब्दगत, वर्तनीगत, वाक्यगत अशुद्धियाँ मिलती हैं। यद्यपि शोध विषय के तथ्यात्मक विश्लेषण में कोई त्रुटि दिखाई नहीं देती, परन्तु उपर्युक्त अशुद्धियाँ अनेक प्रकार से विचार करने पर विवश करती हैं। आमतौर पर यह माना जाता है कि अपनी भाषा को सीखने की क्या आवश्यकता है ? वह तो हमें आती ही है। ऐसे कोई तथ्यात्मक आंकड़े तो उपलब्ध नहीं है कि हिंदी माध्यम में प्रस्तुत शोध कार्य में कितने प्रतिशत भाषागत अशुद्धियाँ पाई गयीं, लेकिन उच्चारण और लेखन में होने वाली अशुद्धियों से इस बात का अनुमान सहज लगाया जा सकता है।

वर्तमान में प्रयोजनमूलक हिंदी का उपयोग सिर्फ सम्बंधित शासकीय विभागों तक सीमित मान लिया गया है, लेकिन वैश्वीकरण के दौर में प्रयोजनमूलक हिंदी अपना आँगन लांघ कर मैदान में आ गयी है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इसे स्थापित होना शेष है। वास्तव में प्रयोजनमूलक हिंदी का विस्तार विश्वविद्यालयों में विभिन्न विषयों में होने वाले शोध कार्यों में करने की आवश्यकता है।

हिंदीतर विषयों में हिंदी माध्यम से शोध कार्य करने वाले शोधार्थियों के लिए प्रयोजनमूलक हिंदी को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाना चाहिए। इसे पीएचडी कोर्स वर्क के साथ जोड़ा जा सकता है। विज्ञान, वाणिज्य, प्रबंधन, कला एवं मानविकी संकायों में स्नातकोत्तर स्तर पर संचालित होने वाले पाठ्यक्रमों में प्रारंभिक सत्र में प्रयोजनमूलक हिंदी का अध्ययन-अध्यापन करने से न सिर्फ हिंदी भाषा समृद्ध होगी, बल्कि उससे शोधार्थियों और विद्यार्थियों का आत्मविश्वास भी बढेगा। जिन शब्दों के पर्याय उपलब्ध नहीं हैं, उन्हें बनाने की प्रेरणा मिलेगी। अपने विषय का ज्ञान होने के साथ यदि भाषागत ज्ञान भी प्राप्त हो जाता है तो अभिव्यक्ति में अभिवृद्धि होगी और व्यक्तित्व विकास में सहायता मिलेगी

शब्द-ब्रह्म के सुधी शोधार्थियों को नए वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं .....